शोध प्रस्ताव

पंचपरगनिया साहित्यकार परमानन्द महतो का जीवन और साहित्यः एक अध्ययन

पीएच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध-प्रारुप

संकाय-जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

राँची विश्वविद्यालय, राँची

वर्ष-2025

शोध निदेशक

डॉ॰ किरण कुल्लू
सहायक प्राध्यापिका
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग (खड़िया)
राँची वीमेंस कालेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधार्थी

रीता कुमारी
एम0ए0, यू0जी0सी0/नेट
स्नातकोत्तर पंचपरगनिया विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

भूमिका

झारखण्ड भारत के पूर्वतीय राज्यों में से एक है। यह राज्य जल-जंगल, पहाड़-पर्वत, नदी झरने के अलावे यह अपने खनिज सम्पदाओं से परिपूर्ण है, उसी प्रकार यहाँ कि संस्कृति की भी अदभूत पहचान रही है। यहाँ कि भाषा संस्कृति को देख स्वतः मन इसकी ओर आकर्षित हो उठती है।

मुझे गर्व है कि मैं भारतीय हूँ और मैं झारखण्ड राज्य की निवासी हूँ। झारखण्ड राज्य के इस पावन भूमि में अनेको जातियाँ निवास करती हैं तथा इन सभी जातियों की अपनी-अपनी जातीय एवं क्षेत्रीय भाषा, संस्कृति कि भी अपनी विशिष्ट पहचान है। इस राज्य में प्रमुख रुप से बोली जानेवाली पाँच जनजातीय भाषाएं-मुंडारी, संथाली, कुँड़ुख़, खड़िया, हो और चार क्षेत्रीय भाषाएँ-पंचपरगनिया, कुरमाली, नागपुरी, खोरठा है।

झारखण्ड राज्य की राजधानी राँची से दक्षिण-पूर्वी भू-भाग पाँच परगना, जिसकी भाषा पंचपरगनिया भाषा का विशिष्ट एवं गौरव पूर्ण स्थान रहा है। राहे, बुंडू तमाड़, बारेन्दा और सिल्ली। इन पाँच परगना की सांस्कृतिक विरासत के केन्द्र बन कर उभरी और इन पाँच परगना की सम्पर्क भाषा पंचपरगनिया कहलाई। इसे द्वितीय राज्य भाषा का दर्जा प्राप्त है।

पंचपरगनिया भाषा पाँच परगना की प्रमुख भाषा है, इसकी सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सम्पदा काफी उन्नत है। किसी भी भाषा साहित्य का प्रारंभ पद्य रचनाओं से होती है, चँकि पंचपरगनिया पद्य रचना काफी समृद्ध है। वहीं गद्य साहित्य के विधाओं में अनेकों कार्य हो चुके हैं। हम जानते हैं कि किसी सशक्त साहित्य की कसौटी उसके पद्य तथा गद्य विधाओं का संतुलित समानान्तर विकास है।

परमानन्द महतो पंचपरगनिया साहित्य में इनकी कृतियाँ पंचपरगनिया भाषा के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन्होंने अपने अथक प्रयास और परिश्रम से पंचपरगनिया भाषा साहित्य को दोनों ही रुपों में प्रतिष्ठित किया है। पंचपरगनिया भाषा के विकास की

गति एवं प्रगति में इनका महत्वपूरण योगदान रहा है। ऐसे महान व्यक्ति के जीवन और साहित्य का मूल्यांकन करने पर, उनके जीवन का अवलोकन, साहित्यकारो के मनोभाव को बल देगा साथ ही साहित्य समृद्ध होगा। पंचपरगनिया साहित्य के आधार स्तंभ माने जानेवाले परमानन्द महतो जी का मूल्यांकन करते हुए उनके साहित्य साधना एवं उनके जीवन कृतियों को सामने रखकर हमे देखना होगा।

शोध विषय का उद्देश्य:-

किसी भी शोध कार्य का महत्व तब तक नहीं होता, जब तक कि उसकी उपयोगिता समाज एवं देश के लिए न हो।

1. पंचपरगनिया साहित्य का गहन अध्ययन करना।
2. पंचपरगनिया भाषा साहित्य के महत्व एवं उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करना, साथ ही साथ इनके संकलन संचयन प्रकाशन और मूल्यांकन की दिशाएं प्रशस्त करना।
3. पंचपरगनिया भाषा के साहित्यकार परमानन्द महतो के जीवन और उनके साहित्य पर प्रकाश डालना।
4. पंचपरगनिया भाषा साहित्य संस्कृति, इतिहास, संस्कृति धरोहर, जनजीवन का परिज्ञान होना तथा साथ ही आम लोगो में जन चेतना का संचार करना।
5. पंचपरगनिया भाषा साहित्य को सुदृढ़ करना।
6. झारखण्ड के सामाजिक सांस्कृतिक विकास में योगदान देना।

शोध विषय का समाज में महत्त्व:-

1. पंचपरगनिया साहित्य का महत्व तथा उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इनके संकलन, संचयन, प्रकाशन और मूल्यांकन की दिशाएँ प्रशस्त होगी।
2. इस शोध प्रबंध के प्रकाश में आने से समस्त पंचपरगनिया भाषा-भाषियों एवं समाज में कवि कलाकारों के प्रति सम्मान बढ़ेगा और जागृति की लहर आएगी।

3. निज भाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगो का रुझान बढ़ेगा एवं नई जागृति उत्पन्न होगी।

4. अन्य झारखण्डी भाषाओं में शोध हेतु प्रेरणादायक साबित होगा।

5. पंचपरगनिया समाज के साथ-साथ समाज के दिग्गज साहित्यकारों के जीवन और साहित्य को प्रकाश में लाने के लिए भावी-पीढ़ी का मनोबल बढ़ेगा।

6. इस शोध कार्य के प्रति भावी-पीढ़ी का मनोबल बढ़ेगा।

शोध प्रेरणा:-

पंचपरगनिया मातृभाषा होने के कारण बाल्यावस्था से ही इस भाषा के प्रति मेरा लगाव रहा है। राँची विश्वविद्यालय राँची के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में स्नातकोत्तर अध्ययन के समय इनकी रचनाओं ने मुझे प्रभावित किया। परमानन्द महतो जी के पंचपरगनिया पद्य और गद्य साहित्य की उच्चता से मेरे मन में कवि के प्रति अत्यंत आदर भाव प्रकट हुआ और उनके व्यक्तित्व के प्रति अनेक प्रकार की जिज्ञासाएँ बढने लगी, तभी से मेरी इच्छा होने लगी कि मै परमानन्द महतो के जीवन और साहित्य पर शोध कार्य करूँ।

वास्तव में साहित्यकार के जीवन को जाने बिना, हम उसके काव्य को ठीक से नहीं जान सकते हैं। उनके व्यक्तित्व को जाने बगैर रचनाओं का मूल्यांकन भी ठीक ढंग से नहीं किया जा सकता है।

परमानन्द महतो द्वारा लिखी गई पुस्तकें -

1. पंचपरगनिया भाषा - 1990

2. जीबन पथेक फूल - 1990

3. पूस पीठा - 2010

4. पंचपरगनिया लोक साहित्य और संस्कृति - 2012

5. बांबरा - 2012

6. पंचपरगनिया लोककथा संग्रह - 2021

7. पंचपरगनिया छटे-खाट' साहित - 2022

8. डायरीक एकटा पात - 2023

9. पंचपरगनिया लोकगीत संग्रह - 2023

उपर्युक्त कृतियों के अतिरिक्त इनकी अनेक रचनाओं का प्रकाशन विभिन्न पंचपरगनिया हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में देखा जा सकता है।

उपर्युक्त रचनाओं के द्वारा इन्होंने पंचपरगनिया एवं झारखण्डी जन समाज की चेतना जागृत करते हुए सामाजिक उत्थान की बात सामने रखी है। भाषा एवं संस्कृति के प्रवक्ता के रुप मैं इनकी पहचान बन चुकी है।

परमानन्द महतो के जीवन और साहित्य पर अब तक किसी ने शोध-प्रबंध प्रस्तुत नहीं किया है। इनकी कृतियों की गहराई से अध्ययन करने की योजना है तथा इनसे जुड़े व्यक्तियों से इस संदर्भ में साक्षात्कार लेकर इनके जीवन साहित्य पर प्रकाश डालने की योजना है।

परिकल्पना:-

पाँच परगना क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा पंचपरगनिया के मूर्धन्य साहित्यकार श्री परमानन्द महतो की साहित्यिक उपलब्धियाँ मुझे सदा प्रेरित करती रही है। इस पंचपरगनिया भाषा के साहित्यकार के सार्थक गतिविधियों को एकत्रित करके जन-जन को इससे परिचित कराना ही मेरी एक मात्र परिकल्पना है।

शोध विधि:-

प्रस्तावित शोध प्रबंध के अध्ययन के लिए निम्नलिखित शोध विधियों का अनुसरण किया जाएगा -

क)	साक्षात्कार विधि

ख)	विश्लेषणात्मक विधि

ग)	विचार-विमर्श विधि

घ)	व्यक्तिक अध्ययन विधि

अबतक किए गए शोधकार्य:-

1. ‘‘पंचपरगनिया लोक-साहित्य’’ - डॉ. सुनीता कुमारी गुप्ता वर्ष- 1998
2. ‘‘पंचपरगनिया भाषा का व्याकरणिक अध्ययन‘‘ डॉ. करम चन्द्र अहीर वर्ष- 2003
3. ‘‘पंचपरगनिया लोकगीतों में जनजीवन’’ डॉ. अम्बिका स्वाँसी वर्ष- 2013
4. ‘‘पंचपरगनिया लोकगीतों में सौंदर्‍य बोध‘‘ डॉ. दिनेश प्रसाद सिंह- 2016
5. ‘‘डॉ. करम चन्द्र अहीर: व्यक्तित्व एवं कृतित्व’’ डॉ. सबिता कुमारी मुण्डा- 2016
6. ‘‘पंचपरगनिया लोककथाओं का साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन’’ डॉ॰ पराग किशोर सिंह- 2016
7. ‘‘पंचपरगनिया लोक साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन’’ डॉ. पूर्णचन्द्र सिंह मुण्डा- 2018
8. ‘‘पंचपरगनिया लोकगीतों में रस विधान’’ डॉ. मनोज कुमार - 2018
9. ’’पंचपरगनिया साहित्यकार ज्योतिलाल महादानी’’ व्यक्तित्व एवं कृतित्व-डॉ॰ दीनबन्धु महतो -2018
10. ‘‘पंचपरगनिया शिष्ट साहित्य: एक अध्ययन’’ डॉ. अशोक कुमार महतो- 2019
11. ‘‘पंचपरगनिया, नागपुरी और कुरमाली का व्याकृत तुलनात्मक अध्ययन’’ डॉ॰ वासुदेव महतो -2019

12. ‘‘पंचपरगनिया लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन’’ डॉ. प्रभुदयाल सिंह मुण्डा- 2020

13. ‘‘पंचपरगनिया लोक काव्य में प्रेम और श्रृंगार एक अध्ययन‘‘ डॉ॰ गोविन्द महतो- 2021

14. ‘‘ पंचपरगनिया लोकगीतों का वर्णनात्मक अध्ययन’’ डॉ. प्रवीण कुमार- 2021

15. ‘‘पंचपरगनिया काव्य में भक्ति अध्यात्म: एक अध्ययन’’ डॉ. नरेन्द्र कुमार दास- 2023

16. ‘‘पंचपरगनिया लोकगीतों में प्रकृति चित्रण: डॉ. रंजीत कुमार प्रामाणिक - 2023

17. ‘‘पंचपरगनिया साहित्य का इतिहास’’ डॉ. विष्णुचरण सिंह मुण्डा - 2024

18. ‘‘राजकिशोर सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व: डॉ. एन्थोनी मुण्डा - 2024

अध्ययन की रुपरेखा

प्रस्तावना:-

- शोध विषय का अभिप्राय और महत्त्व
- शोध प्रक्रिया का वैशिष्टय
- शोध का उद्देश्य
- शोध विधि
- पूर्व शोध कार्यों का विवरण एवं समीक्षा
- आभार

प्रथम अध्याय:-

पंचपरगनिया भाषा एवं साहित्य का सामान्य परिचय -

(क) पंचपरगनिया भाषा का परिचय

(ख) पंचपरगनिया साहित्य का परिचय एवं विशेषता

(ग) पंचपरगनिया साहित्य का स्वरूप

द्वितीय अध्याय:-

परमानन्द महतो का आंतरिक जीवन वृत -

(क) पारिवारिक स्थिति

(ख) जन्म

(ग) बाल्यावस्था

(घ) किशोरावस्था

(ड.) युवावस्था

(च) शिक्षा

तृतीय अध्याय:-

परमानन्द महतो का बाह्य जीवन वृत -

(क विवाह

(ख) पेशा

(ग) विविध कार्य

(घ) गायन-वादन में अभिरुचि

(ङ) साहित्य लेखन में अभिरुचि

चतुर्थ अध्याय:-

परमानन्द महतो की समकालीन परिस्थितियाँ -

(क) सामाजिक परिस्थितियाँ

(ख) सांस्कृतिक परिस्थितियाँ

(ग) साहित्यिक परिस्थितियाँ

(घ) आर्थिक परिस्थितियाँ

(ड.) राजनैतिक परिस्थितियाँ

(च) अन्य परिस्थितियाँ

पंचम अध्याय:-

परमानन्द महतो की पद्य कृतियाँ -

(क) पद्य कृतियाँ - कविता, गीत

(ख) अन्य कृतियाँ

षष्ठम अध्याय:-

परमानन्द महतो की गद्य कृतियाँ -

(क) गद्य कृतियाँ - कहानी, व्याकरण, निबंध, एकांकी, जीवनी

(ख) अन्य कृतियाँ

उपसंहार/निष्कर्ष

परिशिष्टः-

(क) आधार ग्रंथों की सूची

(ख) संदर्भ ग्रंथों की सूची

(ग) पत्र-पत्रिकाओं की सूची

(घ) साक्षात्कार की सूची

(ङ) चित्रावली

नोटः- शोध प्रबंध में आवश्यकता अनुसार आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है ।

शोध निदेशक

डॉ॰ किरण कुल्लू
सहायक प्राध्यापिका
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग (खड़िया)
राँची वीमेंस कालेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधार्थी

रीता कुमारी
एम0ए0, यू0जी0सी0/नेट
स्नातकोत्तर पंचपरगनिया विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

आधार ग्रंथों की सूची

क्र. सं.	लेखक/सम्पादक	पुस्तक का नाम	प्रकाशन	प्र. वर्ष
1.	कुमार डॉ॰ निरंजन	ए॰के॰ झा: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची	2020
2.	गिरिराज डॉ॰ गिरिधारी राम गौंझू	पीटर शांति नवरंगी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	पझरा प्रकाशन, नागपुरी प्रचारिणी सभा, राँची	1990
3.	नाग डॉ॰ शान्ति	डॉ॰ रामदयाल मुण्डा: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	रूम्बुल दिरिओड़ाः, सरनाटोली हतमा, राँची	2023
4.	तिवारी डॉ॰ उमेश नन्द	आधुनिक नागपुरी साहित्य संदर्भ- प्रफुल्य कुमार रायः एक मूल्यांकन	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची	2014
5.	मुर्मू डॉ॰ दुखिया	रघुनाथ टुडू: व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्यारा केरकेट्टा	फाउण्डेशन, राँची	2011
6.	महतो डॉ॰ दीनबन्धु	पाँचपरगना के साहित्यकार ज्योतिलाल महादानी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची	2020
7.	महतो डॉ॰ मुन्ना राम	लक्ष्मीकान्त महतो: व्यक्तित्व एवं कृतित्व स्पर्धा प्रकाशन	रोड नं॰-2 राम नगर कदमा, जमशेदपुर, झारखण्ड।	2020
8.	साहु पंचम	पाण्डेय दुर्गानाथ राय: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची	2016
9.	साहु डॉ॰ सुखदेव	डॉ॰ भुनेश्वर अनुज: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची	2020

संदर्भ ग्रंथों की सूची

क्र. सं.	लेखक/सम्पादक	पुस्तक का नाम	प्रकाशन	प्र. वर्ष
1.	अहीर डॉ॰ करम चंद्र (संपादक)	बिहान पत्रिका	वार्षिक पत्रिका बुंडू	2003—04
3.	टेटे बंदना (संपादक)	झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा पत्रिका	त्रैमासिक झारखण्ड प्रेस, चर्च रोड, राँची, झारखण्ड	2013
3.	तिवारी, भोलानाथ	''भाषा विज्ञान	दरियागंज नई दिल्ली	1955
4.	महतो परमानन्द	पंचपरगनिया भाषा	जनजातीय भाषा अकादमी बिहार सरकार, राँची	1990
5.	महतो परमानन्द	जीबन पथेक फूल	जनजातीय भाषा अकादमी बिहार सरकार, राँची	1990
6.	महतो परमानन्द	पूस पीठा	प्रणेता प्रकाशन, कचहरी रोड, राँची	2010
7.	महतो परमानन्द एवं राजकिशोर सिंह (संपादन)	मेसाकोसा पंचपरगनिया भाषा	विकास केन्द्रीय समिति, बुण्डू	2011
8.	महतो परमानन्द एवं दीनबंधु महतो (सम्पादन)	बांबरा झारखण्ड झरोखा,	रातू रोड, राँची	2012
9.	महतो परमानन्द एवं दीनबंधु महतो	पंचपरगनिया लोक साहित्य और संस्कृति	झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान राँची	2012
10.	महतो प्रो0 दीनबन्धु	''गइदेक भिनु-भिनु डाइर	झारखण्ड झरोखा	2015
11.	महादानी ज्योतिलाल	''नुपूर "	झारखण्ड झरोखा	2015
12.	महतो दीनबन्धु	''सांसकिरतिक आर साहितिक निबंध' '	झारखण्ड झरोखा	2017

13.	महतो परमानन्द	पंचपरगनिया लोककथा संग्रह	झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची	2021
14.	महतो परमानन्द पंचपरगनिया छटे	खाट’ साहित झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची	झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची	2022
15.	महतो परमानन्द	डायरीक एकटा पात	झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची	2023
16.	महतो परमानन्द	पंचपरगनिया लोकगीत संग्रह	झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची	2023
17.	प्रीतम संतोष साहु	’’चिती साँप’	झारखण्ड झरोखा	2014
18.	स्वाँसी डॉ॰ अम्बिका	’’पंचपरगनिया लोकगीत’	झारखण्ड झरोखा	2015
19.	सिंह राजकिशोर	तुलसी-चउरा	झारखण्ड झरोखा	2015
20.	सिंह डॉ॰ पराग किशोर	आधुनिक पंचपरगनिया साहित्यकार और कलाकार	झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची	2017
21.	सिंह डॉ॰ दिनेश प्रसाद	पंचपरगनिया लोकगीतों में सौन्दर्य बोध	प्रगातिशील प्रकाशन नई दिल्ली	2019
22.	सिंह डॉ॰ दिनेश प्रसाद	पंचपरगनिया लोक साहित्य	प्रगातिशील प्रकाशन नई दिल्ली	2022